

लुं वल्लुयं कल कं वल्लुयं सुदण वल्लुयं ^१संज्ञायत ४ यल्लुयं मायाकिर्मं वत त्वयत ४ ॥ ११ ॥
 प्रउ का दण दण मा न्ययवय एव नान्य ता न्यथान्यानि । वल्लुयं रुमा न वां गभं रा दिव्य प्रथम मयान्या
 ॥ १२ ॥ मयाया ध्यत्वा तं सुधन्विम कता ४ कया वल्लुयं याध ४ दया विमिथूना सु प्रवमी नाचू हय ल वर ४ ॥
 ॥ १३ ॥ ^{१०}अं ^३उ ^{२६}व ^{१८}म ^{१९}न ^{२१}क ^{२२}कि ^{२३}मी ^{२४}न ^{२५}व ^{२६}नि ^{२७}जां ^{२८}ग ^{२९}क ^{३०}धि । अद्य द्वा ४ दं ४ गि ४ धी ४ वि ४ गि ४ ति ४ ति ४ था ४ चि ४ य ४ यि ४ च
 न वि ४ गि ४ धी ॥ १४ ॥ उ द्यानी र्व स फ स म की दी नां रि का ल एव नानि । सिंदु व का ड य म दा का र्म क ह लो सि क
 रु ध रा ४ ॥ १५ ॥ गृह रा रा द का ल स द्वा द ग रिं ग न्न वां ग हं द्या व र्ज ४ य स त वा गृह स्य नि दि कृ ४ ॥ १६ ॥ गति
 ना गि ह द्या य ४ यथ म ४ ॥ ॥ त रा दो शु ता नां दि क्ता र्म सो म्य पा य त्वं वा ह ॥ या द्या दी ग न वि गि त कृ ज ना

२ यायस्य

पथा ज नं क नु रू प ह सु ति का गृ ह द्वा न वि द्वा नं ॥ द्वा न न श दो यो ना दि न म न श ॥ १

दूय म न्द्र सो म्य वा क्ता य ४ को ल न्द्र क य मा रा ४ या या र्के ४ र्ग य ४ सो म्य ४ ॥ ११ ॥ जी व य ती व र्व सो रो च
 न्द्र गि तो या वि तो नृ नां ग भ ४ गृ ग थ र्व सा म्र य रु मा म धि या गु र् सो म्य लो म गि ता ४ ॥ १२ ॥ जी व गि तो
 वि या नां क र स्या रा क्ता वि र्भा व न्द्र ४ गृ द्या धि य ४ गि सु त ४ ग नं ग व र ४ ग क र ए वा नां ॥ १३ ॥ व ल्वा न
 मि र सु गृ हा न्न वां ग क द्या दि त र्भा वि छ हं ४ व न्द्र गि तो मी क र पृ र्व द्वा य व र्ज ४ ग भ ४ ॥ १४ ॥ य
 या द्या जी व द् (ओ सूर्या तो ए सु नि ४ ग भं क गि तो । उ द ग य ल ग गि सूर्यो व क न्य सि ग्ध वि द्य ता ४ ॥ १५ ॥
 अरु नि गि ता र्के सु त र्भा नि स र्वा न क मि न्द्र कृ ज सो रा ४ सु दि ना दि च ४ गृ ए गृ ए व क लं त र य क या
 र्व ति न ४ ॥ १६ ॥ मं दान सो म्य वा क्ति गि त व द्वा र्क य (थ र्ग र्व ति न ४ नं स र्जि क व ति मं त द्वा त सा म्य

सादधिकविना ॥२॥ मिश्र कर साद्वेदा नायां स ए व न शि का ल चा स द का ल सौ ल स दि न व व ल मि
 ता ४ सर्व ॥२॥ द श म ए ती य न व र्ण व म य उ र्ध्व क ल र्ण वा य ग्ध नि ण द व द्वा रु ल नि र्व व य य व
 नि ॥२॥ ॐ ति गु हा र्ण व ल व ल आ या द्वि ती य ॥ ॥ अ य रि ण मि उ य क र न मा न र्ण ॥ मि रा य
 की जी र्ण व नू र्ण गि तो वि ल स क ता वि कू डा ४ वी न्द की वि कू ड र वी न्द व ध्व क र्ण वि द या न्या ॥३०
 ॥ व द्वा त क ॥ ग रू म न्द गि तो स म ध्व गि जि जा मि रा लि ण वा न र व स्त्री क्कां शु ही म न मि उ य स द
 दो ण वां स मां गी त ण श जी व नू र्ण क र्ण कू ड स स द्वा क्कां त्रि ४ गि ता की स मो मि रा सूर्य गि
 तो व द्वा स दि म उ ४ ग रू म मा ध्व य त ॥ सूर सौ म्य गि ता व नी न वि स ता म ध्व य त र्ण न्य था

३

लघु ज्ञानक स्यात्सकम्

सोम्या की स द्वा दो स मो कू ड उ नू उ क स्य ण वा व नी ॥ उ क क्कां स द्वा दो स म ४ सूर उ नू ४ सो र स्य वा न्य
 र यो स क्कां स व द श य व न्ध स द्वा उ स क नू मि र्ण क्कां ॥ मि रा स द्वा सी ना त्रि र्ण र्ण ता य नि स र्ण
 ता व न ता वि स द्वा मि रा स मा क्कां स म्य क्कां वि न्या ॥३॥ ॐ ति मि रा मि रा वि ल ण म ध्व य स द्वा ती य
 था ॥ अ य र्ण क स्य स रू य मा द्वा ॥ ॥ व उ र सा न स रू क क ४ य र्ण क्कां स ता न ध्व ॥ गू र मा म ध्व
 यि ग र्ण र क क्कां म ४ य र्ण क्कां ॥ स क ४ य र्ण क्कां णो र ध्व य ४ क र्ण वा त्रि का र्ण वि र सा न ध्व ॥ म द्वा
 वा क्कां ली यि य स रू क नू रू व न्द मा ४ य र्ण ४ ॥३॥ दि स क स र्ण नी त ४ यि ग र क ४ य र्ण क्कां द्वा र्ण
 र्ण व य त ४ सूर क णो र मा म क्कां स ता न ध्व मा द्वा य ॥३॥ म ध्व स रू य ४ यि य वा क्कां र्ण क्कां म ४ गि ला र

तानिपुनैभालक्ष्मिस्तुतः ॥ ३८ ॥ मधुनिर्वनयनामतिमात्तयवित्तमांसनः
 करुत्मका (गेत्रशब्दीषर्तिष्ठलक (भामदः सातोत्रुनदीर्घः ॥ ३९ ॥ आमाविकृष्टयर्वाकृष्टिलागित
 मर्द्धजः सुखीकानः करुवातिकामधुनवाकृष्टपूरः ॥ ४० ॥ कृष्णदीर्घः ॥ ४१ ॥ पिठनाससानिलयकृतिः ॥ ४२ ॥ सुलनखदकलोमाः ॥ ४३ ॥ सूर्यस्तः ॥ ४४ ॥ सायस्तः ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥
 नामदितीयाध्यायः ॥ ॥ अथ धानाध्यायः ॥ ॥ अधानस्तुष्टं यद्वृद्धीतामेधुनपूर्मा एवतितासाया
 समसद्युतवाहितविदग्धं ॥ ५१ ॥ सोनां (गर्का (गवावन्दः ॥ ५२ ॥ सोनाचिताथवाहित्वकासाकादी
 पाजन्मन्वाधानयश्च कालवा ॥ ५३ ॥ यमवकोद्युनकौर्षसागगयदोमियवन्द्या ॥ ५४ ॥ नमश्चगयार्म

अस्तदकयुतद्वृष्ट्या (धैवी ॥ ५५ ॥ कर्तलद्यनावयवास्तित्व (भामस्तुतिसमूहवा ॥ ५६ ॥ कृष्णशामासवृष्ट
 कृष्णजीवसूर्यचन्द्रार्किः सोम्यानी ॥ ५७ ॥ असताद्वगपुसवा ॥ ५८ ॥ यनताल (भामसामसूर्यानी ॥ ५९ ॥ कर्त
 धैवीयायतनं निपीणितेर्लिर्मले ॥ ६० ॥ पृष्टिः ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
 श्रीलाम्बाकृजवन्दोयदातदासं एवतिगर्तः ॥ ७१ ॥ ल (ग्रेवतिनिष्ठोवानवर्षवमनागिर्सेहितपि
 वा एवति। यागस्ततवीजानामरुलावी (गववविनाली ॥ ७२ ॥ विषमर्कविषमनवांशकस्तित्ताठुन
 शशांकलगाकर्का ॥ ७३ ॥ यमकना ॥ ७४ ॥ समरुष्ट्याविर्ता ॥ ७५ ॥ समनवांशगता ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥
 नमियं समरुष्टकृजन्दुगिता ॥ ८१ ॥ यमलोद्विगतीनां (गविन्दुजद्वृष्ट्यास्यदसमो ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥

[illegible]

निनि सपा पञ्च ह कल वियुक्त नव कल कसिक विक्क ह सुदा मृत्यु नाद ४४॥ ४४॥ वउ
 नमु सफ मग ४ पा पा न सु ४४॥ श्रीम नल दा ता। उद य ग ता वा व नु ४ सफ म ना गि सि तै ४
 पा पे ४॥ ४४॥ की (ल न्दो दा द ४१) ग ल ग्ना द धू म ना गि सं सि तै ४ पा पे ४। सो म्य न हि तै व क न्द ४
 स द्या मृत्यु विनिर्द ४४॥ ४४॥ अ नि ष्ठा न न मा ह॥ सा य प्र व ण ग्ना क कूर्त ल ग्ना (ग क ड म र्था।
 मृत्यु मा ग सा र्द व न्द व र्द क न स ण मु ल॥ ४४॥ ल ग्ना दा द ग न व नै ध न सं सि तै ४४॥ सो रि स र्था
 त्रै ४। ज्ञा त स्य ह व ति म त र्ज य दि न व ल यू त ४ य ति र्व व र्सा॥ ४४॥ स त म द न न वा न्य ल ग्ना न (धुं ४४॥
 उ ह यू ता म त र्ज य ति न र णि की न ४४॥ ह उ स त ग नि पू र्ण दे व पू र्ण य दि व सि हि र्ण यू ता व ला

किं ता वा ॥ १० ॥ या (ग) स्मर्तुं गतवति वलिनः यद्वा स्वप्नान् नृष्टं ह मथ वा । पापेर्दृष्टं च त्रवति
मत्र लवर्षः स्यात् ॥ किल मनिगदितां ॥ ११ ॥ इति आवन्ति का वार्यवराहमिहिरकृतोत्प
जातकग्रन्थिष्यथाय ॥ ॥ आयुर्द्वयध्वार्यव्याख्यायता ॥ नाध्वंशकता उनिगाद्वादशान
वरिर्गुहस्य एग (ग) ल्यः ॥ द्वादश द्वादश (ग) द्वादश मासदि नाना ठिकाः ॥ क्रमसं ॥ १२ ॥ द्वाद
दाया प्रवर्तयत्का न्यानि नागिउ त्यानि । वर्धलि संयय च न्य नूपा ता च्वांश कादिरु लं ॥ १३ ॥
व (ग) र्मरु मूत्रा गिउ क्का लन वाशक सक्तं दि उ (ग) वका च्या मि उ लि ता दिं उ ल त्व सक्तं दि
उ ल ॥ १४ ॥ गुरु द्वादश गुरुं कुरु वर्यं नावर्धं सूर्य लूफ किं त्र ग ॥ १५ ॥ कपयनि स्वायुर्दया ना

৫২

सुं जाते त्र विजुं को ॥ १४ ॥ सर्व दिशि वरुं ध्रियं रुं ता गमय याद नं यं तु ता ॥ स नार्द्ध मं ता
 वामं वलवानं क र्क (गधं क ॥ १५ ॥ गृह मघा द गगनं ॥ १६ ॥ रात्रां न वरि ॥ १७ ॥ तं द्रुं का ज ॥ १८ ॥ घृ
 गते दिगते नैर्वा ॥ १९ ॥ का ॥ द द गं ग ॥ २० ॥ सां द ॥ घ घृ गिं गं ग का र व त् ॥ २१ ॥ ॐ या य् दी
 था य ॥ ॥ १२ ॥ गमय रुप वि ॥ १३ ॥ द काला या य न जी वि ता द रु ॥ १४ ॥ स वि वि न्ये र् स्य द गं रु त प
 दा ॥ सर्व ॥ १५ ॥ ल ग्ना र्कं ग गं का नां या व ल वां सु द गं र वं त्य थ मा ॥ त त् क न्य य न रु ला पा क्रि
 मा य गं नां व ला द्वा ॥ १६ ॥ मि गं द्र स्य गृ हां सौ प गं तां गं र ना द गं ॥ सर्वा ॥ स्वा द्वा रि ला वि
 ज म पि न उ क थि त वि य र्थ स्ता नां ॥ १७ ॥ हा रा द गं उ क्ता (ने ॥ पू जित म ध्या य मा च न क्र म सै ॥

लोमादिकृतत्वनपृथक्कुरुलमाहा॥ लोमेष्वेव नखेष्वामहाधनाङ्गानवान्त्वन्निष्पन्नदधि
 षाष्टद्विषुक्तसूत्राकठनं बुद्ध्या नृपतिपूज्यः॥ १०८॥ अथ ग्रीवाकाशम् ॥ सोराव
 कृत्यः पूजिता बुले जेद्विषा चर्चा बुले समल्लभ्यया या एवा सद सत् ॥ १०९॥ का
 ला शरु स्वतं वृन्दार्जातिं कुलं बजा तानी। का रावय वागमत ॥ रुत मिहया रभ ह्यं वायं १०
 ॥ ११०॥ अथ सूर्या योग प्रकरणं ॥ सूर्या द्वितीय मृक्षं विष्णु नं मिह कीर्ति तं यवने ॥ तच्च
 कृत्वा रुद्रकं जन्म निवेद्य सूत्र विलग्नं ॥ १०६॥ सूर्या द्ययगे ध्वनु वर्जितं वासिष्ठ उच्यते हि
 तेनैव यवती गृहेर्णा मत ॥ प्राक ॥ १०७॥ अथ दिग्गुह्या गवन्द सूर्या योग जातस्य

१३
 रूपमाह ॥ यत्तु रूपापनतं निपूर्णं कर्तव्यं मुदृष्टिं वृत्तं वक्रमणः चन्द्रादिहि
 तन्वितं ॥ सूर्यः ॥ ११० ॥ चन्द्राक्षानकपूर्वः ॥ कूटं पृष्ठं तं कलायधिकं । वस्तुव्यवहारं तं क
 मणयो न हं वंति ॥ १११ ॥ मल्लान्निकयत्र दौंशका ॥ ४४ ॥ खान्वितान् कुजाक्षौर्ध्वयत्नं यत्नं वा
 ग्निमायल्लालं क्लान् ॥ ११२ ॥ जीवः ॥ शितं न वदुःशुणमसिग्नं न समन्विता घटकार्त्तं श्रीधन
 मसिग्नं न शितं मुहिरित्यवर्तुलानि वद ॥ ११३ ॥ त्रिदिग्गुह्यागयकत्रयी ॥ ॥ अथ
 यवज्ज्याग ॥ वलुनादिहिरकः ॥ ४४ ॥ यवज्ज्यागः ॥ ४४ ॥ कलातिवली । वदुर्वीर्यं स्तवैर्द्वै ॥ ४४ ॥ यथ
 मावीर्याधिकं सौव ॥ ११४ ॥ नापसृष्टं दृष्टं वकनकयदा जीवीहि दृष्टं वनकाणां निर्गन्तानां

वाक्कात्यनजि ते ४ यद्यतिर्वलिति ॥ ११८ ॥ दिनकनत्कमयुषेत्रदीकिलाहकिवादिनसुधा
 । याचितदीकावलिहि ४ यनाजि ते न न्यदधेर्वा ॥ ११९ ॥ अतिप्रवृत्तयुक्तर्ण ॥ अथना
 नि ॥ १२० ॥ अस्तिनविहृतिमिगं वलमनस्वलितनियममपिवनहृस्तिनहृतद्वि
 पत्रीतं कमाचितं दीर्घसूर्यं च ॥ १२१ ॥ द्विगतीत्रागयुतं कनद्रुमत्साहिर्नविविधवर्द्धाश ॥ १२
 मानधुलाहवनागिबुजातास्तथाशाला ॥ १२२ ॥ अतिगतिगतीत्रयुक्तर्ण ॥ ॥ १२३ ॥ रुद्र
 माह ॥ कशपियसंदष्टगतिनिचयस्तुद्रहिरपिधनवान् । उक्ताणां कयेर्वासाय ४ सो
 म्ये ४ हं नाये ४ ॥ १२४ ॥ अतिगतिस्वरुवमाह ॥ पृष्ठाकिञ्चलुवात्तुमृत्तीदीनप्रकि । संहि

ता ४ पापा ४ सोम्या ४ घञ्निघ्न ४ सर्वनश्च यथाकृमन्त ४ ॥ १२० ॥ कर्किदृष्टाजापतवन्दल (ग्रधनी
 सुनूपश्च । विकलांगजगुदनिडा ४ (गवधुवि (गवत ४ कृष्ण ॥ १२१ ॥ विकसकृष्णकूल (ग्र
 तेमिलिका ॥ १२२ ॥ सुहृत्तुनाशुच ४ वृद्धदृष्टि ४ कर्किणि का (गवय (गवधु कवा ॥ १२३ ॥
 ४ ४ पादविवृद्धामिगुसृष्टहृत्किणलु (गव । त्रिपृहयत्यरुलमर्कापगतपापरु
 लनेवी ॥ १२४ ॥ नस्कनलकृविचकृणधनिचयतिनयुं सकादनिडा ४ खलपापा (गव
 मषादीनां नवांशहवा ४ ॥ १२५ ॥ कूलुत्यकलाधिकवधुमान्यधनिहागिचयसम
 ननडा ४ स्वर्कग ४ कविदृष्टाकिचिच्युना ४ सुद्रुहृह (गेश ॥ १२६ ॥ अथनाऊयागवधुपध

यिषहतिहि नृबस्त्रे नृपवंश एवाह सक्तिना जानशयं वादिहि नृबस्त्रे कुलाहवाश्च नृद्वि
 काण गता ॥ १२॥ निर्द्वजदृष्टि न मूर व्यापित वन्धति नृवध लो ॥ १३॥ नृका रुत पत्रि वृ
 द्वा नीव गते ॥ १४॥ नृगृह दुर्गे ॥ १५॥ नृका पि नृपति जन्म युदाय हृष्टा वग ॥ १६॥ नृदृष्ट ॥
 वलिहि ॥ कदाप गते म्रिय हतिहि नृवनिपात एव ॥ १७॥ नृजया गता नृमाह ॥ ॥ वर्य ॥ १८
 रुम (गच रुचं नादिहि नृकृत् विल (गवा नृपजन्म एवति नृई नृपया (गवल यत् नृदशया
 ॥ १९॥ गमिया गता समा गमना गिणी ल सृ दर्श मनि ला वाध्या अशय नृजय गवा रुध्या यस्मि
 नृक म (गका ॥ २०॥ नृवनि काचा र्ये वना ह मिहि नृकृत् लघु जात कय कीर्त्त काथाय

३३

२४ नृथनाह सया गम ॥ १

॥ १॥ नृदानी दृष्टि गताह सया गताह ॥ च नृह नृदिष्ट त्ववाशय नृकृत् मल नृनया ग
 ॥ २॥ नृधर्मिनी नृवानृक मल कुल विश्रुता ॥ ३॥ कदु गय (गे ॥ पाप तने द लाखादि
 धमा लावा सूर्य ति इ ॥ ४॥ खिता नां मा ला या जन्म सुखिता नां ॥ ५॥ दिन न नृकृत् नृदृष्टि नृदवि
 ल ग्ना रु सृस्ति ते ॥ ६॥ कटं खच उर्थ या विहं ग ॥ ७॥ गत क मृदय सृत न व (गे ॥ ८॥ ग
 टक मय गते हृत् म त घां कु मा त रु ला प न य ॥ ९॥ कृत् नृजीवी दूत नृसोख ला क कृ
 वि कृत् ॥ १०॥ कृत् ॥ ११॥ सुख कर्म स्ते ॥ १२॥ नृदया रु सृस्ति ते र्वजं ॥ यव नृति नृदि पनी ते र्वि
 ॥ १३॥ कर्त्तुं नृवी पी ॥ १४॥ नृय नृयां सुख यत् ॥ १५॥ सुख ला क मय गुण नि ता ल्य सुख ॥ १६॥
 म ल ग्नादि कृत् कय ध उ र्त्त नृन नृस्ति ते या ग ॥ १७॥ नृप नृग कि दृष्टा वजा दी नृरु ला नृमा ॥

गाहिं आधनवर्जित ४ यि ये विंयूक ४ ॥ १३० ॥ तद्वत्सफर्क गते नीकूट कर्ण कार्मुकानि
स्युग नावाद्ये त्रैवी कण्टका न्यै संस्ति ते ४ स्मृता र्द्वे गणी ॥ १३१ ॥ एका न त्रै विलेष्मात् षड्व नाव
स्ति ते षु हे ष्वकी अर्थव तद्वद्दधि नीय एति रुलानि सफानी ॥ १३२ ॥ कीर्त्यायूकान् त
वाक्स्वजनहित ४ धूत शुतुग्राध निरुपा ४ र्था कृति जा विं गति ता स्मृत्तु ले मुन न
क ॥ १३३ ॥ एकादिष्ट हा य गते नूकान् या गन्वि हा य संख्या खा ४ गन यू ग धूत क दान
पाश दा स वी ज्ञ स्यु ४ ॥ १४० ॥ इ ४ शिव तद नि दु द्या त क कृषिक न ४ ४ गत य शु य नि य ज्ञा नां ।
ऊ न्म क म ल शु खि ने ४ य न रा ग्ये ४ सर्व ए वे त ॥ १४१ ॥ र्था व नि का वा र्थ व ता ह मि हि न कृ तो

[illegible]

यत्तवनितास्यपिष्टतलासा। वक्रवींताशायं वृषणविनादिभेवायापीं॥५॥
 कावार्थवनाहमिहिनकतोसीजगकाआय॥ ॥अथनेर्यानिकाआयगसूर्यादिरिनिध
 लेरुतवदसलायुधकनामर्जये॥६॥
 धनंयध्यतिनदोउकापजासुयु॥७॥
 पिरुतिर्यद्वनकानुत्तुत्तुयसितावर्ककृजोद्वयमो। निपुनं कर्जुं॥८॥ कयानयनिकिवासा
 निधनस्य॥९॥
 नर्णभाकृतिमादु॥१०॥
 यवतिमयेयसंज्ञयन। उदाहवनलवि। कोपदानकाल। विनायामपिसकलविधेयमत॥ ॥

१५

स्वलाक॥

लावा॥ सुसंख्यालुप्ता॥ जीवानासु जिदेनवा॥ पथमवच्छेदवा॥ सोम्यवजांनिर्निनियम
 विविर्जुदयुर्ते॥११॥ सफादुर्गिघनलजितलघुमृदुत्वाथवानवविष्णुअनवाथवा
 स्यात्। उर्वकलुसदुजात्मजगुरुह्य॥ पुर्वददयंत्रागिवलनतवीं॥१२॥ अथव
 र्जनयनमाह॥ ॥ वर्धुमासतिथयाशुनिर्गच्छुनिर्वलादयर्कनवतागविकल्पनाद्य
 मर्यादयामिच्छुलिको॥ सुविकल्पतकावर्धयोनवकदानविष्णुधनास्यां॥१३॥ विद्व

४ कार्यावतद्वर्ग

कं४

